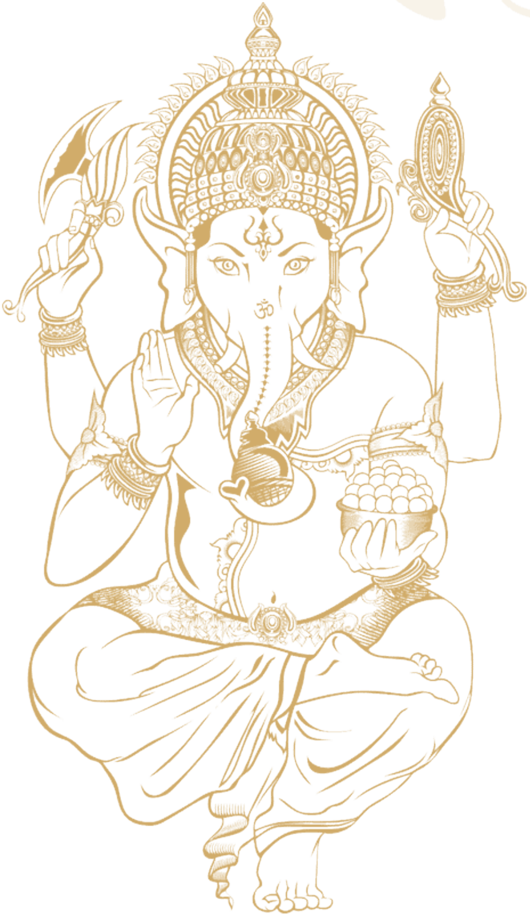

Mr.Amit kumar singh

08 Dec 1977

10:20 AM

Mughal Sarai

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120188101

तिथि 08/12/1977 **समय** 10:20:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Mughal Sarai **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:32:58
अक्षांश 25:18:00 उत्तर **रेखांश** 83:07:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:02:28 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	15:29:48 घं	गण	देव
वेलान्तर	00:08:09 घं	योनि	महिष
सूर्योदय	06:31:02 घं	नाड़ी	अन्त्य
सूर्यास्त	17:07:43 घं	वर्ण	शूद्र
चैत्रादि संवत	2034	वश्य	मानव
शक संवत	1899	वर्ग	सर्प
मास	मार्गशीर्ष	युँजा	मध्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	वायु
तिथि	13	जन्म नामाक्षर	ता-तरुण
नक्षत्र	स्वाति	पाया(रा.-न.)	ताम्र-रजत
योग	अतिगण्ड	होरा	शुक्र
करण	गर	चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी		योगिनी	
राहु 4वर्ष 2मा 19दि		पिंगला 0वर्ष 5मा 19दि	
बुध		भद्रिका	
26/02/2017		28/05/2021	
26/02/2034		28/05/2026	
बुध	26/07/2019	भद्रिका	06/02/2022
केतु	22/07/2020	उल्का	07/12/2022
शुक्र	23/05/2023	सिद्धा	27/11/2023
सूर्य	28/03/2024	संकटा	06/01/2025
चन्द्र	28/08/2025	मंगला	26/02/2025
मंगल	25/08/2026	पिंगला	07/06/2025
राहु	13/03/2029	धान्या	06/11/2025
गुरु	19/06/2031	भ्रामरी	28/05/2026
शनि	26/02/2034		

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			17:57:40	मक	श्रवण	3	चंद्र	बुध	---	0:00			
सूर्य			22:26:15	वृश्चि	ज्येष्ठा	2	बुध	चंद्र	मित्र राशि	1.36	आत्मा	पितृ	क्षेम
चंद्र			16:52:28	तुला	स्वाति	4	राहु	शुक्र	सम राशि	1.12	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			17:52:22	कर्क	आश्लेषा	1	बुध	बुध	नीच राशि	1.36	अमात्य	भ्रातृ	क्षेम
बुध			12:42:05	धनु	मूल	4	केतु	बुध	सम राशि	0.95	मातृ	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु	व		09:29:06	मिथु	आर्द्रा	1	राहु	गुरु	शत्रु राशि	1.35	ज्ञाति	धन	जन्म
शुक्र			11:38:17	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	चंद्र	सम राशि	0.90	पुत्र	कलत्र	विपत
शनि			06:59:20	सिंह	मघा	3	केतु	राहु	शत्रु राशि	1.22	कलत्र	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		19:44:18	कन्या	हस्त	3	चंद्र	केतु	मूलत्रिकोण		---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		19:44:18	मीन	रेवती	1	बुध	शुक्र	मूलत्रिकोण		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

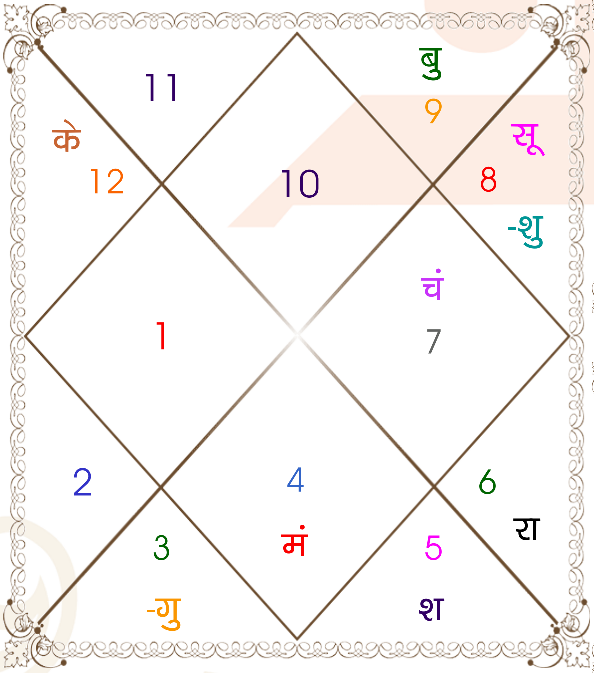

चन्द्र कुंडली

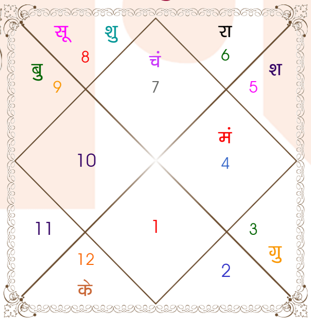

नवमांश कुंडली

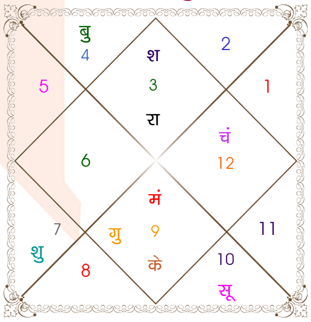

सर्वाष्टकवर्ग

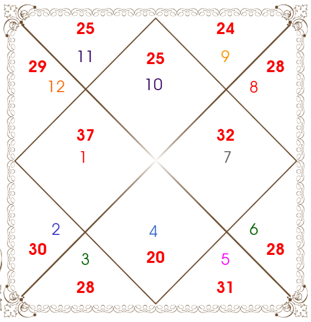

दशमांश कुंडली

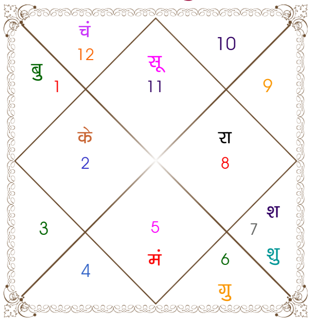

नक्षत्रफल

आपका जन्म स्वाती नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी राशि तुला तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण शूद्र, योनि महिष, नाड़ी अन्त्य, गण देव तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "त" या "ता" से प्रारम्भ होगा।

आप नैसर्गिक रूप से सहनशील रहेंगे तथा बड़े से बड़े कष्ट को भी सहन करने में समर्थ होंगे तथा अनावश्यक खुशी तथा दुःख का आप प्रदर्शन करने के लिए कभी भी उत्सुक नहीं रहेंगे। व्यापारिक कार्यो में आप अत्यन्त ही इच्छुक तथा चतुर रहेंगे तथा अपनी आजीविका यापन में इसे ही प्रधान रूप से अंगीकृत करेंगे। आपका मन दया एवं करूणा के भाव से सर्वथा ओत प्रोत रहेगा तथा दीन दुःखियो के प्रति पूर्ण रूप से आप दयालु रहेंगे। आप अपने सम्भाषण में हमेशा दूसरो के कर्ण प्रिय लगने वाली प्रिय एवं मधुर वाणी का ही उपयोग करेंगे जिससे आपसे सभी लोग प्रसन्न एवं प्रभावित रहेंगे। आपकी प्रकृति धार्मिकता से भी परिपूर्ण रहेगी तथा आप नियमपूर्वक धर्म का आजीवन पालन करेंगे।

दान्तो वणिक्कृपालु प्रियवाग्धर्माश्रितः स्वातौ।

बृहज्जातकम्

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक क्लेश सहिष्णु, व्यापारी, कृपाकारक, मधुर वाणी बोलने वाला और धर्माचरण में तत्पर होता है।

आप अपने जीवन में देवता तथा ब्राहमणों का प्रिय कार्य अर्थात धर्मानुपालन करने वाले होंगे तथा इनके प्रति अपने मन में असीम श्रद्धा का भाव प्रदर्शित करते रहेंगे। आप अपने जीवन काल में विभिन्न प्रकार के सुखैश्वर्य एवं वैभव का आनन्दपूर्वक उपभोग करने में सफल रहेंगे। आपके पास आर्थिक कमी कभी भी नहीं रहेगी। धनधान्य से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी बुद्धि मध्यम श्रेणी की होगी तथा तीव्रता का इसमें सर्वदा अभाव दृष्टिगोचर होगा।

स्वात्यां देवमहीसुरप्रियकरो भोगी धनी मन्द धीः।

जातकपरिजातः

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवता और ब्राह्मणों का प्रिय करने वाला, भोगी, धनी, किन्तु मन्द बुद्धि से युक्त होता है।

आपका रूप देखने में अत्यन्त सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा जिसे देखकर अन्य लोग सहज में ही आपसे प्रभावित रहेंगे। साथ ही मुखमंडल की तेजस्विता भी दर्शनीय रहेगी। आप अन्य जनों से भी मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध स्थापित करेंगे तथा उनके प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे। इससे आपका हृदय सदैव प्रसन्नता से युक्त रहेगा। इसके अतिरिक्त आप राज्य या सरकार से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से धन की प्राप्ति करेंगे तथा जीवन में सहर्ष उसका उपभोग करेंगे।

कन्दर्परूपः प्रभयासमेतः कान्तापरप्रीति रतिप्रसन्नः।
स्वाती प्रसूतौ मनुजस्य यस्य महीपति प्राप्त विभूतियुक्तः।।
जातकाभरणम्

अर्थात स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक कामदेव के समान सुन्दर रूप वाला, अनेक स्त्रियों से प्रीति रखने वाला, प्रसन्नचित तथा राजा से धन प्राप्त करने वाला होता है।

आप विविध प्रकार के शास्त्रों का ज्ञानार्जन करके एक प्रसिद्ध विद्वान के रूप में समाज में ख्याति प्राप्त करेंगे तथा धर्म का आप निष्ठापूर्वक पालन करेंगे। समाज की अन्य स्त्रियों के प्रति आपमें अनुराग का भाव रहेगा तथा उनके आप प्रिय भी रहेंगे परन्तु प्रकृति कंजूसी से परिपूर्ण रहेगी।

विदग्धो धार्मिकश्चैव कृपणः प्रियवल्लभः।
सुशीलो देवभक्तश्च स्वातौ जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक विद्वान, धार्मिक, कृपण, अन्य स्त्रियों का प्रिय, सुशील एवं देवताओं का भक्त होता है।

ताम्र पाद में उत्पन्न होने के कारण आप राज्य या सरकार से धन लाभ अर्जित करने में हमेशा सफल रहेंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। आप सन्तोषी प्रवृति के होंगे तथा अनावश्यक इच्छाओं को मन में उत्पन्न नहीं करेंगे। आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे तथा सभी लोग आपका आदर सत्कार करेंगे। विविध प्रकार की धन सम्पतियों तथा सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। माता पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनसे भी आप पूर्ण धन सम्पति को प्राप्त करेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगे तथा नाना प्रकार के वाहन एवं भूमि से भी युक्त रहकर प्रसन्न रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे। आप में परोपकार की भावना भी रहेगी तथा सज्जन पुरूषों का आप नित्य आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

तुला राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका शरीर तथा मुखमंडल देखने में सुन्दर होगा। आपकी आँखें बड़ी बड़ी होंगी तथा नासिका भी ऊँची उठी हुई रहेगी। नाना प्रकार के वाहन साधनों से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। समाज में आपके संबंध विस्तृत रहेंगे तथा इसी परिपेक्षण में स्त्री वर्ग से भी आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ सम्बन्ध रहेंगे। आप वाहन तथा भूमि से युक्त होकर इनसे पर्याप्त लाभार्जन करेंगे। आपके पराक्रम का प्रभाव समाज में सभी लोग स्वीकार करेंगे। सभी लोग आपको यथोचित आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। आप विविध प्रकार के ऐश्वर्य तथा धनवैभव से सुसम्पन्न

रहकर इसका उपभोग करेंगे। आप स्त्री से पूर्णरूपेण पराजित ही रहेंगे तथा अपने समस्त कार्यों को उसी के निर्देशानुसार सम्पन्न करेंगे। आप किसी भी कार्य को कुशलता से सम्पन्न करने में सर्वथा समर्थ रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के आप प्रिय भक्त रहेंगे तथा श्रद्धापूर्वक इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। धनधान्यादि संग्रह करने की भी आप की प्रकृति रहेगी एवं बन्धु वर्ग से उपकार में आप हमेशा तल्लीन रहेंगे एवं उनकी भलाई के लिए कार्य करते रहेंगे।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप समाज में देवता ब्राहमण एवं सज्जनों की पूजा तथा सेवा करने में हमेशा तत्पर रहेंगे तथा विद्वता से सुशोभित रहकर पवित्र जीवन यापन करेंगे। आपके शरीर में सुगन्धि का वास रहेगा आप भ्रमण तथा यात्रादि करने में अपने अधिकाँश समय को व्यतीत करेंगे। आप कय विकय अर्थात व्यापारिक कार्यों में अत्यन्त प्रवीण रहेंगे। आप अपने बन्धुओं तथा सम्बन्धियों की यत्न पूर्वक भलाई तथा सहयोग करेंगे परन्तु बाद में इन्हीं लोगों के द्वारा आपको उपेक्षित भी होना पड़ेगा। साथ ही धनधान्य से भी आप परिपूर्ण रहेंगे।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः कयविकयेषु कुशलो देवद्विनामा सरुक्।
बन्धूनामुपकारकृद्धि रुषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप में धैर्य का गुण विद्यमान रहेगा एवं अपने समस्त कार्यों को आप धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगे। न्याय में आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा स्वयं भी निश्छल रूप से समाज में अपनी न्यायप्रियता का सिक्का जमाएंगे। आपकी इस निश्पक्षता को देखकर अन्य जन आपको अपने विवादों को सुलझाने के लिए आपको मध्यस्थ या पंच बनने की प्रार्थना करेंगे। आप अपनी इस जिम्मेदारी का भली भाँति निर्वाह करेंगे। आपकी सन्तति अल्प ही रहेगी एवं भाग्योदय भी विलम्ब से होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः कयविकयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा। सरकार के उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग को प्रसन्न करने में आप निपुण रहेंगे तथा उनसे पूर्ण आदर एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। यदा कदा आप अनावश्यक रूप से अधिक बोलेंगे जिससे आपके प्रभाव में कमी आएगी। आप ज्योतिष अथवा ग्रहनक्षत्रादि शास्त्र में पारंगत रहेंगे तथा बन्धु एवं सेवक वर्ग से हार्दिक स्नेह का भाव रखेंगे।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

जीवन में आप कभी कभी अनुचित समय में अपने क्रोध का प्रदर्शन करेंगे अतः बाद में इसके लिए आपको दुःख उठाना पड़ेगा। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुरता से पूर्ण रहेगी। दीन दुखियों के प्रति आपके मन में दया एवं करूणा की भावना सर्वथा व्याप्त रहेगी। आपके नेत्र भी चंचलता से युक्त रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया विषम रहेगी कभी अत्याधिक मात्रा में धनागम होगा तो कभी अत्यल्प मात्रा में। आप स्वयं को घर के अन्दर बलवान तथा घर से बाहर कमजोर अनुभव करेंगे। मित्रों के मध्य आप हमेशा उनके प्रिय रहेंगे। आप देश से बाहर विदेश में निवास कर सकेंगे। साथ ही बन्धुवर्ग के आप हमेशा उपकारी रहेंगे।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येऽति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप जीवन में नाना प्रकार के वाहनों से युक्त रहेंगे। साथ ही आपके हृदय में दानशीलता की भावना भी विद्यमान रहेगी जिसका आप समयानुसार प्रदर्शन करते रहेंगे। स्त्री के आप आजीवन वश में रहकर धनवैभव से सुसम्पन्न रहकर उसका उपभोग करेंगे।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर एवं प्रिय रहेगी जो श्रोता को प्रिय लगेगी। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही निर्मल एवं सरल रहेगी। अपनी बातों को सरलता पूर्वक प्रकट करना तथा दूसरे के विचारों को भी सुगमतापूर्वक ग्रहण करना आपकी विशेषता रहेगी। आपको थोड़ी मात्रा में शुद्ध एवं सात्विक भोजन करना अत्यन्त ही रूचिकर प्रतीत होगा। अन्य जनो के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा एवं स्वयं भी श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा प्रतिपादित आदर्श गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे। इसके साथ ही नानाप्रकार के सुखैश्वर्य एवं धनधान्य का भी आप सुखपूर्वक उपभोग करने में सफल रहेंगे।

देखने में आपका रूप सौन्दर्य से युक्त रहेगा। आपके मन में दानशीलता की भावना भी सर्वथा विद्यमान रहेगी तथा समयानुकार दीन दुःखियों तथा जरूरत मन्द को आप दान देते रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा हमेशा सादगी से युक्त रहेंगे। साथ ही समाज में आप एक आदर तथा सम्मानीय विद्वान होंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

महिष योनि में पैदा होने के कारण आप वाद विवाद तथा झगड़े इत्यादि में अधिकाँश विजय ही प्राप्त करेंगे तथा स्वयं भी साहसीयोद्धा होंगे तथा साहसिक कार्यो को करने के लिए हमेशा उद्यत रहेंगे। आपकी सन्तति अधिक रहेगी। आपकी प्रकृति वायु प्रधान होगी अतः जीवन में यदा कदा वायु रोगों से भी पीड़ित रहना पडेगा। आपकी बुद्धि में तीक्ष्णता का अभाव रहेगा तथा मध्यम बुद्धि से ही आप के अधिकाँश कार्यकलाप सफल होंगे।

संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु बहुप्रजः।
वाताधिको मन्दमतिर्नरो महिषयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् महिष योनि में उत्पन्न जातक युद्ध के मैदान में विजय प्राप्त करने वाला, योद्धा, कामाग्नि से प्रबल, अधिक संतति वाला, वायु प्रधान प्रवृति तथा धर्म के प्रति निष्ठावान रहता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यो में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यो एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यो में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियाँ, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिल करण, गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शतभिषा नक्षत्र शुक्ल योग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवग्रहनिर्माण, कयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। इसके साथ ही गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यो में वर्जित रखें। इन दिनो तथा समय में आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहना पड़ेगा।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधा तथा अन्य कार्यो में रूकावटें उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देवी लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए तथा शुक्रवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही सोना, हीरा, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, चावल, दूध आदि पदार्थो का दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में भी न्यूनता रहेगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।